सुविचार

कृतज्ञता न केवल स्मृति है, बल्कि ईश्वर के प्रति उसके उपकारों के लिए हृदय की श्रद्धांजलि है. - एन.पी. विल्स

www.lokmatnews.in epaper.lokmat.com/lokmatsamachar

नजरिया

लोकमत समाचार

लोकतांत्रिक राष्ट्र के सामने चुनौतियां

कहीं भी लोकतांत्रिक गिरावट इतनी स्पष्ट नहीं है जितनी हमारे राजनीतिक विमर्श की गुणवत्ता में है

अश्वनी कुमार

सीनियर एडवोकेट एवं पूर्व कानून मंत्री

लोकतंत्र, अंततोगत्वा किसी तानाशाह के बारे में नहीं है जो अपनी इच्छा को सब पर थोपे. यह बीच का रास्ता खोजने पर आधारित है और चरम सीमाओं की अस्वीकृति है. इसमें अपने उद्देश्य को विचार-विमर्श से हासिल किया जाता है.

इस साल की शुरुआत में मनोरम गणतंत्र दिवस परेड ने देश की सॉफ्ट और हार्ड पॉवर को प्रदर्शित किया, जो दुनिया को वैश्विक स्तर पर अपने दमखम का संदेश देती है. बजट सत्र के दौरान संसद में अपने पारंपरिक संबोधन में राष्ट्रपति मुर्मु ने सरकार के महत्वाकांक्षी एजेंडे का खुलासा किया और निकट भविष्य में विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में शामिल होने की राष्ट्रीय आकांक्षा को साझा किया. लेकिन उपलब्धियों की इस प्रभावशाली कहानी की चमक भारत के लोकतंत्र में आती गिरावट की सच्चाई से फीकी पड़ गई है.

संविधान के अतिक्रमण के बारे में समय-समय पर आने वाली खबरें हमारे लोकतांत्रिक जुड़ाव की गुणवत्ता और गहराई पर सवाल उठाती हैं. हाल के दिनों में, विपक्षी नेताओं के संसदीय बयानों को रिकॉर्ड से हटाने, राज्यसभा में प्रधानमंत्री के भाषण में व्यवधान, सदन की रिकॉर्डिंग के लिए एक विपक्षी सांसद पर निलंबन की कार्रवाई ने संसद की संस्थागत पवित्रता को क्षति पहुंचाई है. शैक्षणिक संस्थानों में कथित तौर पर जातिगत भेदभाव से उपजे असहनीय तनाव के कारण देश के एक प्रतिष्ठित संस्थान में अठारह वर्षीय दलित छात्र की आत्महत्या और ग्यारहवीं कक्षा के एक सोलह वर्षीय दलित छात्र की उनके बोतल से पानी पी लेने के कारण उसके प्राचार्य द्वारा कथित पिटाई की घटनाएं हमारे ऐतिहासिक और सामाजिक भेदभाव का एक दर्दनाक उदाहरण हैं.

उत्तर प्रदेश में विपक्षी दल के एक मौजूदा विधायक को अदालत द्वारा पंद्रह साल पुराने ट्रैफिक अवरुद्ध करने के मामले में दो साल की जेल की सजा अपराध के अनुपात को देखते हुए बहुत ज्यादा है और इसके कारण राज्य विधानसभा के एक निर्वाचित सदस्य पर अपनी सदस्यता से भी वंचित होने की नौबत आ गई. यह अभियोजन पक्ष की दमनकारी वास्तविकता को दर्शाता है. जैसे-जैसे न्याय मिलने में देरी होती है, वैसे-वैसे करियर नष्ट होता जाता है, प्रतिष्ठा बर्बाद होती है और अपूरणीय अपमान से आत्मा पर ऐसा घाव हो जाता है जिसे भरा नहीं जा सकता.

लेकिन कहीं भी लोकतांत्रिक गिरावट इतनी स्पष्ट नहीं है जितनी हमारे राजनीतिक विमर्श की गुणवत्ता में है. हाल ही में दिल्ली एयरपोर्ट पर कांग्रेस पार्टी के एक पदाधिकारी की गिरफ्तारी इसका उदाहरण है. राजनीतिक विरोधियों द्वारा एक-दूसरे के खिलाफ दिए जाने वाले जहरीले भाषण लोकतंत्र की दुर्दशा को दिखाते हैं. हमारे समय की राजनीतिक भाषा व्यक्तिगत दुश्मनी और हमारी राजनीति की संकीर्णता को दर्शाती है तथा संविधान के गरिमा के वादे का उल्लंघन करती है.

हम जानते हैं कि भाषा, संस्कृति, कल्पना और इतिहास एक-दूसरे से निकटता से जुड़े हुए हैं. बोले गए शब्दों को तेज आवाज नहीं बल्कि गरिमा वजनदार बनाती है और नेताओं को लोगों के साथ जुड़ने में सक्षम बनाती है. हमारे सम्मानित संविधान निर्माताओं ने अपने उच्च आदर्शों को भावनाओं के साथ गद्य और पद्य में पिरोया है जो हमें हमारे व्यापक उद्देश्यों के लिए प्रेरित करते हैं. उनकी भाषा दिल और दिमाग के बीच पुल का काम करती थी. वास्तव में, अन्याय और कुशासन की सबसे कड़ी आलोचनाएं देश के पुनरुद्धार के लिए उत्कट आशा की सर्वोत्तम अभिव्यक्तियां भी हैं. लोकतंत्र उदार विचारों के बीच बसता है और यह भाषा की गहराई और गरिमा में परिलक्षित होता है. यह संवेदनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं बल्कि उनका सम्मान करना है और यह स्वीकार करना है कि राजनीतिक विरोधी व्यक्तिगत दुश्मन नहीं हैं जिनका उपहास किया जाए और कुचल दिया जाए.

लोकतंत्र, अंततोगत्वा किसी तानाशाह के बारे में नहीं है जो अपनी इच्छा को सब पर थोपे. यह बीच का रास्ता खोजने पर आधारित है और चरम सीमाओं की अस्वीकृति है. इसमें अपने उद्देश्य को विचार-विमर्श से हासिल किया जाता है. नेताओं के बोले गए शब्द और भाषण लोकतंत्र की कसौटी होते हैं. हमारे सार्वजनिक दिग्गज अपने कथनों से पहचाने जाते हैं और उनके कथन हमें यह भी बताते हैं कि हम कौन हैं. जाहिर है, इसलिए, भारत के क्षीण लोकतंत्र को केवल एक उदात्त राजनीति के माध्यम से पुनर्जीवित किया जा सकता है. गणतंत्र का उत्सव तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक हमारी राजनीति संकीर्ण पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण तक सीमित रहती है और उन लोगों द्वारा संचालित होती है, व्यापक अन्याय पर जिनकी अनुमानित चिंता काफी हद तक संदिग्ध है, और जिन पर सत्ता हासिल करने का ही जुनून सवार रहता है. हमारे गणतंत्र की बुनियाद सत्तारूढ़ शासकों द्वारा शक्ति के न्यायोचित प्रयोग और सत्ता के दुरुपयोग के खिलाफ विपक्ष के निर्भीक प्रतिकार पर आधारित है. यह उन लोगों के लिए चुनौती है जो इस महत्वपूर्ण समय में गरिमामय ढंग से राष्ट्र के नेतृत्व की इच्छा रखते हैं.

चीन-पाकिस्तान के खिलाफ भारत का सख्त रुख

चीन-पाकिस्तान से भारत के रिश्ते और बिगड़ने की आशंका वाली अमेरिकी खुफिया रिपोर्ट वैसे तो चिंता में डालने वाली है लेकिन वस्तुस्थिति का अगर आकलन करें तो संबंधों में बिगाड़ के लिए जिम्मेदार चीन और पाकिस्तान ही हैं. भारत ने सिर्फ अपने सुरक्षा तंत्र को ही और मजबूत किया है. अमेरिकी खुफिया तंत्र ने वाशिंगटन में बुधवार को सांसदों से कहा कि उसे भारत-पाकिस्तान और भारत-चीन के बीच तनाव बढ़ने तथा उनके बीच संघर्ष होने की आशंका है. खुफिया तंत्र के अनुसार, पाकिस्तान के कथित या वास्तविक उकसावों की स्थिति में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पहले की तुलना में भारत द्वारा कहीं अधिक सैन्य बल के जरिये जवाबी कार्रवाई किए जाने की आशंका है. रिपोर्ट के अनुसार भारत-चीन द्विपक्षीय सीमा विवाद को बातचीत के जरिये सुलझाने में लगे हुए हैं, लेकिन 2020 में दोनों देशों की सेनाओं के बीच हुए संघर्ष के मद्देनजर संबंध तनावपूर्ण ही रहेंगे. यह मूल्यांकन अमेरिकी खुफिया तंत्र के वार्षिक खतरे के आकलन का हिस्सा है, जिसे राष्ट्रीय खुफिया निदेशक के कार्यालय द्वारा अमेरिकी कांग्रेस के समक्ष प्रस्तुत किया गया. दरअसल भारत के प्रति चीन और पाकिस्तान का रवैया शुरू से ही आक्रामक रहा है और भारत ने हमेशा रक्षात्मक मुद्रा अपनाए रखी. अब मोदी सरकार ने इस रवैये में बदलाव किया है और सीमा पर किसी भी घुसपैठ या हमले का सख्ती से जवाब देने की नीति शुरू की है. यही कारण है कि सीमा पर हालात कई बार बेहद तनावपूर्ण हो जाते हैं. असल में भारत की सहिष्णुता और सहनशीलता को ये दोनों पड़ोसी देश उसकी कमजोरी समझने की भूल कर रहे थे, मानो शांति बनाए रखने का दायित्व सिर्फ भारत का ही है! चीन तो अपनी आक्रामक मुद्रा को बढ़ाता ही जा रहा था. यहां तक कि वर्ष 2014 में जब चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत के दौरे पर थे, उस समय भी चीनी सैनिक सीमा पर घुसपैठ करने से बाज नहीं आए थे. डोकलाम ट्राई जंक्शन पर तो भारत और चीन की सेनाएं 73 दिन आमने-सामने रही थीं. चीन की यह नीति ही है कि दबाव बनाकर अपने पड़ोसी देशों की सीमा का अतिक्रमण करने की कोशिश करता है. इसलिए भारत सरकार ने अब उसके आगे झुके बिना उसे तुर्की-ब-तुर्की जवाब देने का फैसला किया है. यही रुख भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ भी अपनाया है और उरी आतंकी हमले के बाद पीओके में वर्ष 2016 में भारत द्वारा की गई सर्जिकल स्ट्राइक इसी का उदाहरण था. अमेरिका समेत पूरी दुनिया को भारत के इस रुक को समझना होगा और शांति स्थापना के लिए भारत पर दबाव डालने की बजाय चीन तथा पाकिस्तान को समझाएं.

लघुकथा - सुभाष चंद्र लखेड़ा

वापसी

यह सच था कि सुकेश स्कूली जमाने के अपने उस प्यार को कभी न भुला पाया जिसे कुछ लोग महज किशोरावस्था का चलताऊ आकर्षण मानते हैं. उसने मन्नू को दिल से चाहा था और उसे पाने के सपने संजोये थे. खैर, मन्नू के लिए प्यार मतलब तब सचमुच वही था जैसा आम लोग सोचते हैं. फलस्वरूप, एक दिन मन्नू खुशी-खुशी बाबुल की दुआएं लेकर किसी पराये की दुल्हन बनकर विदा हो गई.

कुछ वर्षों बाद उसने भी अपनी गृहस्थी बसा ली. पत्नी के रूप में उसे सुरेखा मिली. सुरेखा ने उसके बिखरे जीवन को संवारने में कोई कोर-कसर न छोड़ी. फलस्वरूप, वह जीवन में सफलता के पायदानों पर चढ़ता चला गया.

यही कोई पंद्रह वर्ष बाद एक दिन उसे मन्नू का फोन आया. पता चला कि मन्नू अब एक तलाकशुदा औरत जैसा जीवन बिता रही है. न जाने क्यों, उसके दिल के किसी कोने में वह प्रेम की बाती फिर से प्रज्ज्वलित हो उठी जिसे मन्नू आराम से बुझा गई थी. वह और मन्नू अब जब-तब फोन पर पुराने दिनों को याद करने लगे. यही कोई दो महीने बाद मन्नू ने उसे जब किसी जगह मिलने के लिए बुलाया तो वह इंकार न कर सका. नियत दिन पर मन्नू से मिलने के लिए किसी बड़े काम का बहाना बनाकर जब वह घर से निकलने लगा तो रोज की तरह सुरेखा ने उसे दही-चीनी खिलाते हुए कहा, ''आराम से जाइए. जिस काम के लिए जा रहे हैं, वह जरूर सफल होगा.''

सुकेश कुछ सोचते हुए घर से तो निकल पड़ा लेकिन पास के मेट्रो स्टेशन से वह वापस घर लौट आया. वह समझ चुका था कि इस अटपटी प्रेम कथा को यूं आगे बढ़ाना किसी के लिए भी श्रेयस्कर नहीं होगा.

नेटोपीडिया

यूनिवर्सल कॉपी

आप चाहे लेखक हों, स्टूडेंट हो या रिसर्चर हों, अक्सर आपको अपने काम की जानकारियों के लिए इंटरनेट पर सर्च करना जरुरी हो जाता है. जरुरी जानकारियों को आप कॉपी करके मास्टर फाइल में पेस्ट भी करते होंगे. लेकिन क्या हर बार आप इसमें

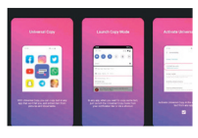

सफल हो पाते हैं? कई वेबसाइट अपने कंटेंट को कॉपी से बचाने के लिए सलेक्ट या कॉपी ऑप्शन डिसएबल कर देती हैं. ऐसे में आप क्या करेंगे? यूनिवर्सल कॉपी एक ऐसी एन्ड्रॉयड एप्लीकेशन है, जो आपकी इस मुश्किल को आसान करती है. यह आपके फोन में इंस्टॉल किसी भी एप्प का, या ब्राउजर में मौजूद वेबसाइट का टेक्स्ट कॉपी कर सकती है. यही नहीं, इसका स्कैनिंग मोड एक्टिवेट कर आप चित्र पर लिखा टेक्स्ट भी कॉपी कर सकते हैं.

पुण्यतिथि विशेष सावित्रीबाई फुले ने देखा था महिला सशक्तिकरण का सपना

समानता के अवसर बढ़ाने की जरूरत

डॉ. संजय शर्मा

प्राध्यापक

sanjay@dhsgsu.edu.in

लगभग सवा सौ साल पहले सावित्रीबाई फुले की विरासत ने एक ऐसी दुनिया का सपना देखा था जो सामाजिक-राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक आयामों में समानता और समता की संस्कृति के साथ विकसित हो. एक ऐसी दुनिया जो लैंगिकता के संदर्भ में पूर्वाग्रह, रुढ़िवादिता और भेदभाव से मुक्त हो. एक ऐसी दुनिया जो विविधतापूर्ण, न्यायसंगत और समावेशी हो.

औपनिवेशिक भारत में हंटर आयोग (1882) के समक्ष दो प्रमुख सवाल ; जो स्त्री शिक्षा के मौजूदा स्वरूप एवं उसके भविष्य की दिशा और दशा को आकर देने वाले थे; की पड़ताल करने पर आश्चर्यजनक रूप से भारत में महिलाओं की शिक्षा का समकालीन विमर्श उभरता है.

हंटर आयोग (1882) के समक्ष पहला सवाल (क्रमांक-42) इस बात की चिंता कर रहा था कि तात्कालीन शिक्षा विभाग बालिका शिक्षा के विद्यालयों की स्थापना के लिए किस प्रकार प्रयत्नशील है? इनकी स्थापना के संबंध में क्या-क्या निर्देश विभाग के स्तर पर दिए जा रहे हैं ? इनके विषय में सदस्यों की क्या राय है? इसी के साथ दूसरा सवाल (क्रमांक-43) इस बात की चिंता कर रहा था कि शिक्षा संस्थानों में बालिकाओं को बालकों के साथ पढ़ाने की संभावनाओं को किस रूप में तलाश किया जाए?

इन सवालों के संदर्भ में आर्य समाज (लाहौर), हिंदू देशभक्त पत्रिका के संपादक क्रिस्टोदास पाल, न्यायमूर्ति बदरुद्दीन तैयब जी एवं अंजुमन-ए-पंजाब की तरफ से जवाब दाखिल करते हुए कहा गया कि भारत में अभी बालिकाओं की शिक्षा को सह-शिक्षा के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है. साथ ही शिक्षा विभाग (सरकार) के द्वारा बालिका शिक्षा के विद्यालयों की स्थापना की प्रगति निराशाजनक है, वस्तुतः यह दोनों सवाल आज भी उतने ही ज्वलंत और प्रासंगिक हैं, जिनके लिए आज से लगभग सवा सौ साल पूर्व सावित्रीबाई फुले ने इस तरह के संघर्षों की शुरुआत महाराष्ट्र में कर दी थी.

जन-अध्यात्म - पुष्पेन्द्र फाल्गुन

मर गए क्या ?

फोन पर उधर से आवाज आई, 'भैया जिंदा हैं न?' मुझे लगा कि उन्हें मेरे जिंदा रहने से हैरत हुई, मैंने पूछा, 'आप क्या सोच रहे थे...' वह बोले, 'फेसबुक पर आपके नहीं रहने की खबर है और दर्जनों लोग श्रद्धांजलि दे चुके हैं.' उनकी बात सुनकर मुझे हंसना चाहिए था, आपको हंसी आ रही है न! पर मुझे हंसी नहीं आई, मैं परेशान हो गया.

उन्होंने फोन पर ही मुझे ताकीद दी कि आप फौरन फेसबुक पर जाइए और अपनी मृत्यु की खबर का खंडन कीजिए..., मुझे उनकी सलाह जरा विचित्र सी लगी. मैं कैसे खंडन करुं, मैंने थोड़े ही अपने मरने की खबर डाली है. मैंने उनसे ही कहा कि आपने तो मुझसे बात कर ली है न, फिर आप ही लिख दीजिए कि आपने मुझसे बात की और मैं जीवित हूं तथा जो पोस्ट फलां ने लिखी है वह गलत है.

कुछ देर बाद मैंने भी अपनी फेसबुक वॉल पर अपने होने की पोस्ट लिखी. बावजूद इसके अनेक लोगों ने मुझसे फोन पर बात की और हर किसी ने सबसे पहला सवाल यही पूछा, 'जिंदा हो न कि मर गए?'

बड़ी विचित्र स्थिति थी, जो लोग कभी हाल-चाल नहीं पूछते, वे लोग भी यह जानने को उत्सुक थे कि अगर मैं जिंदा हूं तो फेसबुक पर मरा कैसे? मैं बोल-बोलकर थक गया कि ऐसा गलत पोस्ट लिखने वाले से पूछो, लेकिन लोग मुझसे ही जानना चाहते थे कि मर गए क्या? और जब मैं अपने जिंदा होने की बात कह रहा था तो उनमें से कुछ हंस रहे थे तो कुछ अफसोस के साथ आश्चर्य व्यक्त कर रहे थे, 'अच्छा! ठीक हो! एकदम ठीक! अरे!'

सचमुच में मृत्यु की झूठी खबर आमतौर पर हंसने के लिए ही होती होगी, तभी तो हर कोई यह जानकर कि मैं जिंदा हूं, हंस रहा था. अपनी मृत्यु की खबर सुनकर मैं व्याकुल हो गया, जबकि सभी की तरह मैं भी जानता हूं कि मृत्यु अटल है. बल्कि मैं तो इस तरह मरने की ख्वाहिश रखता हूं कि किसी को मालूम भी न चले और अपन दुनिया से फना हो जाएं, फिर अपनी मृत्यु की बात सुनकर मेरे भीतर व्याकुलता क्यों बढ़ी?

मृत्यु से सिर्फ जीवन ही खत्म नहीं होता, बल्कि न जाने कितने ही दायित्व और कर्तव्य अधूरे रह जाते हैं. हालांकि दुनिया में कहावत है कि किसी के बिना न दुनिया का और न ही किसी का काम रुकता है, मैं भी जानता हूं कि मेरे मर जाने से किसी का कोई काम नहीं रुकेगा, अगर कहूं कि मेरे जीते जी भी किसी का कोई काम नहीं रुकता है तो अतिशयोक्ति न होगी, फिर यह व्याकुलता क्यों?

मृत्यु की झूठी खबर और इस झूठ की वजह से जिस सत्य का बोध हुआ, उससे मैं व्याकुल हुआ... सवाल कि मर गए क्या? ने मुझे सोचने पर बाध्य कर दिया कि क्या सचमुच मैं जिंदा हूं?

नजर के पार

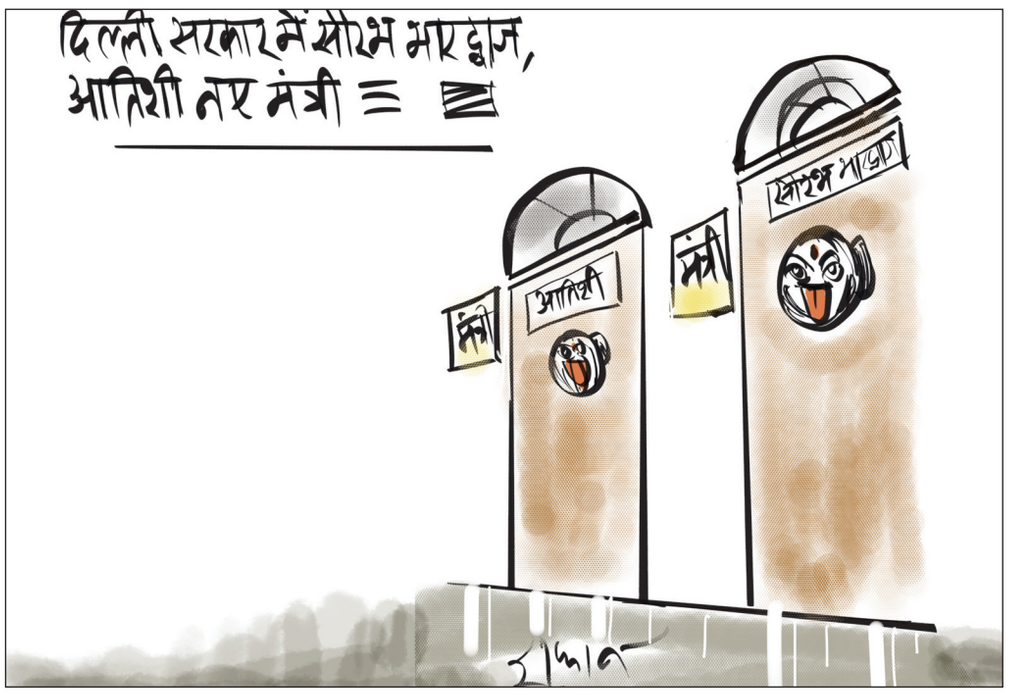

ग़ज़ल

अंधेरा

अब तो कुछ और भी अंधेरा है
ये मिरी रात का सवेरा है

रह-ज़नों से तो भाग निकला था
अब मुझे रह-बरों ने घेरा है

आगे आगे चलो तबर वालो
अभी जंगल बहुत घनेरा है

क़ाफ़िला किस की पैरवी में चले
कौन सब से बड़ा लुटेरा है

सर पे राही की सरबराही ने
क्या सफाई का हाथ फेरा है

सुरमा-आलूद ख़ुश्क आंसुओं ने
नूर-ए-जां ख़ाक पर बिखेरा है

राख राख उस्तख़्वां सफ़ेद सफ़ेद
यही मंज़िल यही बसेरा है

ऐ मिरी जान अपने जी के सिवा
कौन तेरा है कौन मेरा है

सो रहो अब 'हफीज़' जी तुम भी
ये नई ज़िंदगी का डेरा है

- 'हफ़ीज़' जालंधरी

बहुत पहले लिखी जा चुकी थी यूक्रेन युद्ध की प्रस्तावना

रहीस सिंह

वरिष्ठ पत्रकार

raheessingh@gmail.com

दुनिया ने पिछले कुछ वर्षों के अंदर तहरीर स्क्वायर, इंडिपेंडेंट स्क्वायर, कैपिटल हिल जैसी ऐसी अनेक घटनाएं देखीं. ये घटनाएं एक तरफ जनमानस के गुस्से की अभिव्यक्तियों का प्रारूप थीं जो संभवतः व्यवस्था से असंतुष्टि का परिणाम थीं और दूसरी तरफ ये राष्ट्रीय संस्थाओं एवं वैश्विक संस्थानों पर एक प्रश्नवाचक चिह्न भी थीं, जो यह बता रही थीं कि ये अपने कर्तव्यों का अनुपालन करने में अक्षम रहीं. रूस-यूक्रेन युद्ध ऐसे ही कारणों का परिणाम है. यह अलग बात है कि पश्चिमी पक्ष इसके लिए रूस को कठघरे में खड़ा कर रहा है और दूसरा पक्ष पश्चिमी ताकतों को. गौर से देखें तो रूस-यूक्रेन युद्ध वर्ष 2013-14 में ही शुरू हो गया था, जिसकी प्रस्तावना काफी पहले लिखी जा चुकी थी, 2022 से तो इसका उपसंहार लिखना आरंभ हुआ जो अभी तक पूरा नहीं हो पाया है. इसके लिए कोई एक दोषी नहीं है यह तो स्पष्ट है लेकिन यह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है कि इसने दुनिया को किस सीमा तक प्रभावित किया है और दुनिया ने इससे सीखा क्या है? एक सवाल यह भी है कि इस

युद्ध में अब तक जीता कौन है और हारा कौन?

पुतिन ने जब 24 फरवरी 2022 को युद्ध की घोषणा की थी तो उन्होंने अपने एक घंटे के भाषण में कुछ महत्वपूर्ण बातें कही थीं. ये बातें इस युद्ध की पृष्ठभूमि को 1991 तक ले जाती हैं जब सोवियत संघ का विघटन हुआ था. रूस ने इसे डकैती के रूप में देखा था. यह ठीक वैसा ही विचार था जैसा कि कभी हिटलर और मुसोलिनी का वर्साय संधि के बाद दिखा था. सभी जानते हैं कि इससे नाजीवाद और फासीवाद पनपा था और अंततः दुनिया को विश्व युद्ध तक ले गया था. रूस-यूक्रेन युद्ध की पृष्ठभूमि भी कुछ हद तक इतिहास को दोहराती हुई दिख रही है.

दुनिया भर की सरकारें, व्यावसायिक प्रतिष्ठान और परिवार इस युद्ध के आर्थिक प्रभावों का शिकार हो रहे हैं. ऊर्जा की निरंतर ऊंची होती कीमतों और बढ़ती मुद्रास्फीति ने यूरोप को मंदी के मुहाने तक पहुंचा दिया है जहां से फिलहाल अभी यूरोप बाहर आ भी नहीं पाएगा. यही नहीं उच्च खाद्यान्न कीमतों ने विशेषकर विकासशील दुनिया में भूख और अशांति की व्यापकता को और गहरा किया है.

जो भी हो, अमेरिका और यूरोप इसलिए खुश हो सकते हैं कि वे इस युद्ध में रूस को काफी नुकसाने पहुंचाने में सफल रहे हैं. उन्हें यह भी तसल्ली हो सकती है कि रूसी सेना की अक्षमता को बेनकाब कर रूसी समाज को भी बेपर्दा कर दिया है. दूसरी तरफ पुतिन को इस बात की खीझ हो सकती है कि रूसी फौज यूक्रेन और जेलेंस्की को सबक क्यों नहीं सिखा पाई. लेकिन खुशी और खीझ के बीच का जो सच है वह नेपथ्य में चला गया.

संस्थापक संपादक : **स्व. जवाहरलाल दर्डा**, चेयरमैन, एडिटोरियल बोर्ड : **विजय दर्डा,** एडिटर-इन-चीफ : **राजेंद्र दर्डा**, संपादक : **विकास मिश्र** * (*पी.आर.बी. कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार) © **लोकमत समाचार** में प्रकाशित सभी सामग्री का सर्वाधिकार लोकमत मीडिया प्रायवेट लि. के पास सुरक्षित है. लोकमत मीडिया प्रायवेट लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक बालाजी मुले द्वारा लोकमत मीडिया प्रा.लि., प्लॉट क्र. 192, 207, 208 एम.आई.डी.सी. इन्डस्ट्रियल एरिया, बूटीबोरी, नागपुर में मुद्रित एवं लोकमत भवन पं. जवाहरलाल नेहरु मार्ग, नागपुर में प्रकाशित.
P.O.BOX NO. 230 दूरध्वनि : 0712-2423527 (7 लाइन्स) फैक्स : 6618555 : संपादकीय : lsedit.ngp@lokmat.com विज्ञापन : advt.ngp@lokmat.com वितरण : circ.ngp@lokmat.com